महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक..... दिनांक : 06.02.2016

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ में राष्ट्रीय सेवा योजना के गुरू श्रीगोरक्षनाथ एवं हिन्दुआसूर्य महाराणा प्रताप इकाई के सप्त दिवसीय विशेष शिविर में **शिक्षा धर्म और स्वामी विवेकानन्द** विषय पर व्याख्यान देते हुए **दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर के बी.एड. विभाग के अस्सिटेंट प्रोफेसर एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के गोरक्षप्रान्त के अध्यक्ष डॉ. राजशरण शाही** ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक क्षमता और पश्चिम की भौतिक शक्ति का समन्वय ही विश्व का मार्गदर्शन करने में समर्थ है। भारतीय धर्म चिन्तन की गहराई को ओर विश्व का ध्यान स्वामी विवेकानन्द ने आकृष्ट किया था और अपने प्रदीप्त दृष्टि से जो प्रस्तुतीकरण उन्होंने की उसका आज भी प्रभाव वैश्विक स्तर पर देखा जा रहा है। आज पुनः दुनिया भारत की ओर देखने लगी है। मध्य युग में शैक्षिक, सामाजिक और धर्म के क्षेत्र में गिरावट के लाख प्रयास के बावजूद भारत अपनी अक्षुण्ण संस्कृति के बल पर ही पुनः–पुनः खड़ा होकर चुनौतियों का सामना करता रहा है। भारतीय परम्परा और संस्कृति की जड़े बहुत गहरी हैं। सनातन काल में भौतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक दृष्टि से शायद ही कितना उन्नतशील रहा हो जितना कि भारत। इतने आक्रमणों और थपेड़ों को झेलते हुए भी भारतीय धर्म संस्कृति निरन्तर दिव्यमान होती है। इन सबके पीछे भारत के महापुरूष और मनीषियों का त्याग, बलिदान और समर्पण रहा है। उन्हीं में से एक स्वामी विवेकानन्द ने ऐसे समय में भारत को आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व के सामने प्रस्तुत किया, जब दुनिया भारत के प्रति हीन दृष्टि रखती थी। भारतीय धर्म, चिन्तन का विराट स्वरूप देखकर दुनिया अचम्भित रह गयी। स्वामी विवेकानन्द ने न केवल धर्म बल्कि शिक्षा की व्यापकता पर विशेष बल देते थे। उन्होंने विशेष रूप से जनशिक्षा और स्त्री शिक्षा का महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा कि जब तक भारत के प्रत्येक पढ़े–लिखे को कृतघ्न समझता हूँ जब तक कि भारत में कोई भूखा और नंगा हो। उनके सम्पूर्ण धर्म दर्शन में सशक्त राष्ट्र और मानव सेवा कूट–कूट कर भरा पड़ा है। मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और सबसे बड़ा पुनीत कार्य है।

कार्यक्रम डॉ. मृत्युंजय कुमार सिंह, डॉ. यशवन्त कुमार राव, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने भी अपना विचार व्यक्त किया। इस अवसर पर स्वयं सेविका रंजना अनु और अनिता, पूजा, पूजा निषाद ने सरस्वती वन्दना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

(डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी)

प्रभारी, सूचना एवं परामर्श